International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 169-171

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 169-171
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-09-2019
Accepted: 27-10-2019

नीतू कुमारी
शोधार्थी, हिमाचल प्रदेश विश्वविधालय शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

ललित कुमार
शोधार्थी, हिमाचल प्रदेश विश्वविधालय शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
नीतू कुमारी
शोधार्थी, हिमाचल प्रदेश विश्वविधालय शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

समकालीन हिन्दी उपन्यास - बदलते जीवन मूल्य

नीतू कुमारी, ललित कुमार

समकालीनता पर विचार करते हुए ही जो प्रश्न सामने आते है वह निम्न है क्या समकालीन और आधुनिक मे कोई अंतर है ? क्या ये दोनों समानान्तर है? इन प्रश्नो का समाधान यह है कि 'समकालीन' शब्द कालबोधक है अर्थात समय का बोध करवाने वाला है। दूसरा 'आधुनिक ' शब्द कालबोधक के अलावा मूल्यबोधक भी है अर्थात मूल्य जिनमे नैतिकता, करुणा, संवेदना इत्यादि का बोध निहित हो अतएव समकालीनता का बोध साहित्यकार व रचनाकार के समय का समकाल व समानान्तर काल के जीवन और सामाजिक साहित्य को इंगित करता है। जब कि आधुनिक से समकालीन का बोध होता है पर उसके आगे उस शब्द का एक विशिष्ट व निजी अर्थ सामने आते है।[1]

समकालीन शब्द हिन्दी मे अंग्रेजी के 'contemporary' का पर्याय है। जिसका कोशीय अर्थ 'एक ही समय का या अपने समय का ।[2]

डॉ॰ विश्वंभर नाथ उपाध्याय ने अपनी पुस्तक 'समकालीन कहानी कि भूमिका ' मे समकालीन शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते है - "समकाल शब्द यह बताता है कि काल के इस प्रचलित खंड या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है। इसे उलट कर कहे तो कहेंगे कि मनुष्य कि वास्तविक स्थिति देखकर या उसे अंकित -चित्रित करते ही हम समकालीनता के अवधारणा को समझ सकते है। शर्त यही है कि लेखक आज के मनुष्य (देशकाल-स्थिति) के अंकन मे वस्तुगत रहे, यानि उसके चित्रण की विधि कोई भी हो लेकिन उससे जो मानव बिम्ब उभरता हो वह वास्तविक जीवन के निकट हो।[3] विस्तृत विसंगतियो एवं चुनौतियो में भी विशेष महत्व को दर्शाने वाली समस्यायों का स्पष्टीकरण ही समकालीनता को उत्पन्न करता है।

'मूल्य ' शब्द हिन्दी मे अंग्रेजी के वैल्यू (value) शब्द का पर्याय है अर्थशास्त्र मे मूल्य का अर्थ वस्तुओ के क्रय-विक्रय मे प्रयुक्त होने वाली मुद्रा के रूप मे लिया जाता है। दर्शनशास्त्र मे मूल्य के अंतर्गत समाज के विविध व्यवहार

जीवन दृष्टियों और उपलब्धियों को रेखांकित किया जाता है। मूल्य शब्द भी जीवन के इन विस्तृत रूपों के अनुसार भिन्न -भिन्न अर्थों मे प्रयुक्त और ग्रहण किया जाता है।[4]

रामधारी सिंह दिनकर ने मूल्यों को आचारगत मानते हुए कहा है "मूल्यों से ही मानव का व्यवहार स्यंत होता है। मूल्य वे मान्यताएं है जिन्हे मार्गदर्शक मानकर सभ्यता चलती रही है और जिनकी उपेक्षा करने वालो को परंपरा, अनैतिक या बागी कहलाती है।"[5] इस प्रकार मूल्य वही है जो मानव मूल्य के विकास मे सहायक हो।

सातवें दशक के उतरार्ध मे हिन्दी उपन्यासों मे जो विचारगत भेद दृष्टिगत होता है, वही उसकी लोकप्रियता और विकास का प्रमुख कारण है। अंत: इस काल के उपन्यास फ्रायड, एडलर और यूंग के मनोविश्लेषण से प्रभावित है। इन उपन्यासों के पात्रो मे दमित इचछाओ और मन: स्थिति के अंतर्द्वंध को प्रभावशाली रूप से अंकित किया गया है।

औपनिवेशिक पराधीनता से देश की मुक्ति के बाद हिन्दी उपन्यास के सामने नव यथार्थ का ऐसा परिदृश्य उपस्थित हुआ जिसमे उसके बहुमुखी विचरण की अनंत संभावनाएं थी। उपन्यास अपने समय का साक्षी तो होता ही है वह समय के साथ यात्रा भी करता है। अपनी लगभग पाँच दशकों की यात्रा मे हिन्दी उपन्यास ने देश के बदलते हुए जीवन यथार्थ को उसके पूरे विस्तार और वैविध्य मे गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है इस अवधि मे परिमाण और प्रकार दोनों दृष्टियों से हिन्दी उपन्यास का अभूतपूर्व विकास हुआ है। शायद ही समकालीन यथार्थ का कोई ऐसा पक्ष हो जो उपन्यास की संवेदनशील पकड़ से छूट गया हो। पिछली आधी सदी मे गांवो की वास्तविक ज़िंदगी और उनमे आए बदलाव, स्त्री की परंपरागत दुखभरी दास्तां उसके रूपान्तरण तथा सबलीकरण की प्रक्रिया दलितों की नर्कतुल्य ज़िंदगी और उनके उठ खड़े होने की सचचाई, समाज के पिछड़े वर्ग का विद्रोह, मध्यवर्ग का बहुरंगी यथार्थ, परिसर जीवन की विकृतियाँ, राजनीति के क्षेत्र मे आई गिरावट, कला, साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र की बदसूरत वास्तविकता आदि हिन्दी उपन्यास मे अपने यथार्थ रूप मे दिखाई देते है।[6]

विज्ञान के प्रचार व प्रसार से व्यक्ति के जीवन और जीवन दर्शन मे जो परिवर्तन आया है, मूल्यो मे जो परिवर्तन हुआ उसे उपन्यासकारो ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अत्यंत कार्यकुशलता से चित्रित किया है।[7] समकालीन उपन्यास साहित्य मे साहित्यकारों ने अपने परिवेशगत यथार्थ अथवा बदलते जीवन मूल्यों यथा: समाज मे मिटती संवेदनाएं, खोकले रिश्ते, यौन विकृतियाँ, विकृत मानवता, दोगला चरित्र, पशच्मि सभ्यता के प्रभाव से प्रभावित सम्बन्धों की अस्थिरता का चित्रण अपने उपन्यासों मे किया है।

आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य को स्वार्थी, आत्मकेंद्रित तथा व्यक्तिवादी बना दिया है। परिणाम-स्वरूप भौतिकता और विलासिता की दौड़ मे वह मानव-मूल्यों से विमुख हो गया है। ऐसी स्थिति मे नैतिकता और अनैतिकता, आदर्श व यथार्थ मे संघर्ष होना स्वाभाविक है। इस संघर्ष के कारण कुंठा, निराशा, अवसाद, एकाकीपन का विकास हुआ है और मनुष्य मानसिक रूप से भी टूट चुका है और विकृत मानसिकता का शिकार हो गया है।[8] विकृत मानसिकता का उपन्यास साहित्य मे अच्छा उदाहरण, सोना चौधरी द्वारा रचित उपन्यास "पायदान" की पात्र अपने ही चाचा द्वारा बलात्कार का शिकार होती है। "जिस तरह कोई भूखा जानवर मांस का टुकड़ा नही छोडता फिर चाहे वह उसी के बच्चे का हो, उसी तरह मेरे चाचा ने मुझे नोचा था।... दिन मे कई बार सब खेत पर चले जाते तो चाचा मौके का फायदा उठाता और हम दोनों मे से जो मिल जाता उसे ही घेर लेता। उस समय हम पहली-दूसरी कक्षा मे पढ़ते थे। अन्दर ही अन्दर मुझे अपने से नफरत सी होती। कक्षा मे बैठे सब बच्चे पढ़ रहे होते लेकिन मै रात

की बातें सोचकर डरती और आने वाली रात का भय भी दबोचता। [9]

बदलते जीवन मूल्यों मे खोखले रिश्तों का स्वर 'मनमोहन सहगल' के उपन्यास "समझौते से पहले" का पात्र प्रमोद विवाह को एक शारीरिक आकर्षण मानता है। प्रमोद सोच रहा था "अरुणा के संयोग मे आनंद था, रस था। काश, यह ऐसा ही बना रह सके। जीवन साथी के तौर पर भी तो बुरी नही। पी॰एच॰डी॰ हो रही है परिवार मे बराबर का धनार्जन करेगी। उसका समर्पण ही उसके मेरे प्रति प्रेम की गवाही देता है। परंतु माता-पिता की जिद पूरी हुई और मुझे भट्टी परिवार की इकलौती वारिस जुही से विवाह कर अमरीका मे करोड़ो का बिसनेस संभालना पड़ा।...आगे प्रमोद का दिमाग जड़वत हो गया वह बैठा-बैठा एक बार कांपा और फिर अपने आप से समझौता सा करता हुआ स्वत कह उठा, "जुही भी सुंदर है,फिर करोड़ो की सामी, ज़िंदगी गुलाबो की सेज बन रही हो तो कांटो की सोच ही क्यों? अरुणा का स्वाद अतिरिक्त सही।" प्रमोद के चेहरे पर कपट और कूटनीति की रेखा खिंच गई।"[10] इस तरह से समकालीन उपन्यासकारो ने बदलते जीवन परिदृश्य को सामने रख कर उपन्यास साहित्य का सृजन कर बदलते जीवन मूल्यों को अपने साहित्य मे चित्रित कर मानवता की अर्थवता को स्पष्ट करने का सार्थक प्रयास किया है।

वर्तमान समाज भौतिकवाद के रंग मे रंगा हुआ है जिसमे मूल्यों के स्थान पर अर्थ की प्रधानता है। मानव अपने नैतिक मूल्यों को खोकर अनैतिक तत्वो की ओर प्रोत्साहित हो रहा है। आज अर्थ के आगे सभी रिश्ते झूठे और बेमानी हो गए है। कहा भी गया है कि "बाप बड़ा न भईया सबसे बड़ा रुपया।"[11] सामाजिक परिदृश्य के बदलते स्वरूप मे दया, करुणा, प्रेम, भाईचारा, एकता और नैतिकता का अर्थ ही कही खो-सा गया है। आज टीवी एलेक्ट्रोनिक मीडिया तथा प्रोधौगिकी के विकास ने मानवीय संवेदनाओ को अत्यधिक प्रभावित किया है आज का मनुष्य बहुत कम समय मे बहुत ज्यादा पा लेना चाहता है जिस कारण वह मानसिक तनाव का शिकार होता जा रहा है। इस प्रकार ये सभी सामाजिक पहलू सामाजिक चेतना के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति और जीवन मूल्यों को प्रभावित करते है।

संदर्भ सूची

1. एम॰ रघुनाथ, International Journal of Sanskrit Research "अनंता" - 2016
2. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी कोश - पृ॰ 134
3. डॉ॰ विश्वंभर नाथ उपाध्याय, समकालीन कहानी कि भूमिका - पृ॰ 2
4. डॉ॰ राजेश रानी, हिन्दी-उपन्यासों मे सामाजिक चेतना - पृ ॰ 164-65
5. रामधारी सिंह दिनकर, आधुनिक बोध - पृ॰ 12
6. गोपाल राय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास - पृ॰ 399
7. डॉ॰ राजेश रानी, हिन्दी- उपन्यासों मे सामाजिक चेतना - पृ॰ 179
8. वही - पृ॰ 177
9. सोना चौधरी, पायदान - पृ॰ 14
10. मनमोहन सहगल, समझौते से पहले - पृ॰ 14
11. डॉ॰ राजेश रानी, हिन्दी -उपन्यासों मे सामाजिक चेतना - पृ॰ 175